

विकसित भारत 2047 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर

एसोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान

Email: drankushkhs@gmail.com

परिचय

“विकसित भारत” की अवधारणा एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना करती है जो आर्थिक सशक्तिकरण, वैज्ञानिक उन्नति, तकनीकी नवाचार और सामाजिक समावेशन के माध्यम से सतत एवं समावेशी विकास के पथ पर अग्रसर हो। यह दृष्टिकोण केवल सकल घरेलू उत्पाद या भौतिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव विकास, जीवन की गुणवत्ता, नैतिक मूल्यों और पर्यावरणीय संतुलन को भी समान रूप से महत्व देता है। इस व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति में भारत की अपनी भारतीय ज्ञान परंपराएँ (Indian Knowledge Systems – IKS) एक सुदृढ़ वैचारिक एवं व्यवहारिक आधार प्रदान कर सकती हैं (Sen, 2005; Ministry of Education, 2020)।

भारतीय ज्ञान परंपरा उस व्यापक, गहन और बहुआयामी बौद्धिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में हजारों वर्षों के चिंतन, अनुभव, अवलोकन और प्रयोग की निरंतर प्रक्रिया से विकसित हुई है। यह परंपरा केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन के प्रत्येक पक्ष—दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, साहित्य, कला, नैतिकता, समाज और शासन—को समग्र रूप में समझने का प्रयास करती रही है (Radhakrishnan, 1951)।

इस परंपरा की एक विशिष्ट विशेषता इसका समग्र और अंतःविषयक दृष्टिकोण है, जिसमें ज्ञान की विभिन्न शाखाएँ अलग-अलग इकाइयों के रूप में नहीं, बल्कि एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई दिखाई देती हैं। भारतीय चिंतन में विज्ञान और अध्यात्म, तर्क और अनुभव, व्यक्ति और समाज, तथा मानव और प्रकृति के बीच विरोध नहीं बल्कि सामंजस्य पर बल दिया गया है (Frawley, 2003)। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परंपराएँ आधुनिक युग की जटिल चुनौतियों—जैसे मानसिक तनाव, नैतिक संकट, पर्यावरणीय असंतुलन और सामाजिक विखंडन—के समाधान में भी प्रासंगिक प्रतीत होती हैं।

भारत की ज्ञान परंपराएँ अनेक विचारधाराओं, दार्शनिक प्रणालियों और व्यवहारिक प्रथाओं का संगम हैं, जिनमें वैदिक, उपनिषदिक, बौद्ध, जैन, सांख्य, योग, वेदांत और तांत्रिक धाराएँ प्रमुख हैं। ये सभी परंपराएँ मानव जीवन को केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित न मानकर मानसिक संतुलन, नैतिक आचरण और आध्यात्मिक उन्नति से भी जोड़ती हैं। भारतीय दर्शन में धर्म, कर्म, मोक्ष और लोकसंग्रह जैसी अवधारणाएँ व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं (Kapoor, 2010)।

भारतीय ज्ञान परंपरा के मूलभूत ग्रंथ

भारतीय बौद्धिक परंपरा का विकास अनेक प्राचीन, गहन और प्रभावशाली ग्रंथों के माध्यम से हुआ है, जिन्होंने न केवल धार्मिक और दार्शनिक चिंतन को दिशा दी, बल्कि सामाजिक संगठन, नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टि और जीवन-दर्शन को भी आकार प्रदान किया। ये ग्रंथ भारतीय सभ्यता की निरंतरता और बौद्धिक समृद्धि के प्रमाण हैं।

वेद (लगभग 1500–500 ई.पू.) भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक चिंतन की आधारशिला माने जाते हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में देवताओं की स्तुति, यज्ञ-विधि, सामाजिक संरचना, प्रकृति के प्रति सम्मान और प्रारंभिक दार्शनिक प्रश्नों का समन्वय दिखाई देता है। वेदों में निहित ऋत (Cosmic Order) की अवधारणा मानव

जीवन को ब्रह्मांडीय व्यवस्था से जोड़ती है, जो भारतीय चिंतन की विशिष्ट पहचान है (Müller, 1891; Radhakrishnan, 1951)।

उपनिषद् (लगभग 800–400 ई.पू.) वेदों के दार्शनिक उत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें आत्मा (आत्मन) और परम सत्य (ब्रह्म) की एकता, ज्ञान के माध्यम से मुक्ति तथा अज्ञान के बंधन से विमुक्ति जैसे गहन प्रश्नों पर विचार किया गया है। उपनिषदों ने आंतरिक साधना और आत्म-अनुभूति को ज्ञान का सर्वोच्च साधन माना, जिससे वेदांत दर्शन का विकास हुआ (Radhakrishnan, 1953; Deutsch, 1973)।

भगवद्गीता, महाभारत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण दार्शनिक ग्रंथ, कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का समन्वित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। कृष्ण और अर्जुन के संवाद के माध्यम से यह ग्रंथ निष्काम कर्म, नैतिक दायित्व और आध्यात्मिक मुक्ति के संतुलन पर आधारित जीवन-दर्शन को प्रतिपादित करता है, जो आधुनिक जीवन में भी अत्यंत प्रासंगिक है (Zaehner, 1969; Sen, 2005)।

पतंजलि के योगसूत्र योग दर्शन का व्यवस्थित और सूत्रात्मक प्रतिपादन करते हैं। अष्टांग योग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि—के माध्यम से यह ग्रंथ मानसिक अनुशासन, आत्मसंयम और चेतना के उच्चतम स्तर की प्राप्ति का मार्ग दर्शाता है। योगसूत्र न केवल आध्यात्मिक उन्नति, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और जीवन-संतुलन के लिए भी महत्वपूर्ण हैं (Feuerstein, 1979; Taimni, 1961)।

आयुर्वेदिक संहिताएँ, विशेष रूप से चरक संहिता और सुश्रुत संहिता, स्वास्थ्य को शारीरिक, मानसिक और पर्यावरणीय संतुलन के रूप में परिभाषित करती हैं। इनमें आहार, दिनचर्या, ऋतुचर्या, औषधीय वनस्पतियों और शल्य-चिकित्सा का विस्तृत विवरण मिलता है। आयुर्वेद रोग-निवारण के साथ-साथ निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर बल देता है, जो इसे एक समग्र और वैज्ञानिक चिकित्सा प्रणाली बनाता है (Wujastyk, 2003; Sharma, 2013)।

रामायण और महाभारत केवल पौराणिक आख्यान नहीं हैं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक चिंतन के व्यापक ग्रंथ भी हैं। इनमें कर्तव्य, धर्म, नेतृत्व, न्याय, त्याग और मानवीय संबंधों के आदर्श रूपों का चित्रण मिलता है। ये महाकाव्य भारतीय समाज में नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक रहे हैं (Hiltebeitel, 2001; Kapoor, 2010)।

तिरुक्कुरल, तमिल साहित्य का एक महान नैतिक ग्रंथ, धर्म (अरम), अर्थ (पोरुल) और काम (इनबम) के त्रिवर्ग पर आधारित है। इसके संक्षिप्त लेकिन गहन दोहे नैतिक आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों को सार्वभौमिक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं, जिससे यह धार्मिक सीमाओं से परे मानवता का मार्गदर्शक ग्रंथ बनता है (Pope, 1886; Sen, 2005)।

समग्र रूप से देखा जाए तो ये मूलभूत ग्रंथ भारतीय ज्ञान परंपरा की दार्शनिक गहराई, नैतिक दृष्टि और व्यवहारिक उपयोगिता को प्रतिबिंबित करते हैं। इन ग्रंथों में निहित विचार आज भी विकसित भारत की संकल्पना को बौद्धिक, नैतिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान करने में सक्षम हैं।

आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपराएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा में आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन की अनेक सशक्त धाराएँ विकसित हुईं, जिन्होंने जीवन, दुःख, कर्म, आत्मा और मुक्ति जैसे मूलभूत प्रश्नों पर विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। इन परंपराओं ने न केवल वैयक्तिक आत्मोन्नति पर बल दिया, बल्कि सामाजिक नैतिकता, अहिंसा, करुणा और विवेकपूर्ण जीवन शैली को भी महत्व दिया।

जैन दर्शन

जैन दर्शन, महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है। यह दर्शन मानता है कि प्रत्येक जीव में शाश्वत आत्मा विद्यमान है, जो कर्मबंधन के कारण जन्म-मरण के चक्र में बंधी रहती है। नैतिक आचरण, आत्मसंयम और तपस्या के माध्यम से आत्मा को शुद्ध कर मोक्ष की प्राप्ति संभव है। जैन दर्शन में अहिंसा को सर्वोच्च मूल्य माना गया है, जिसका प्रभाव भारतीय नैतिक चिंतन, सामाजिक जीवन और पर्यावरणीय चेतना पर गहराई से पड़ा है (Dundas, 2002; Jaini, 1979)।

जैन परंपरा की यह विशेषता है कि वह आध्यात्मिक साधना के साथ-साथ तर्क, अनुशासन और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व पर बल देती है, जिससे यह दर्शन समकालीन नैतिक और पारिस्थितिक विमर्श में भी प्रासंगिक बनता है।

बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन, गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित, मानवीय दुःख की सार्वभौमिक समस्या और उससे मुक्ति के मार्ग पर केंद्रित है। चार आर्य सत्य—दुःख का अस्तित्व, दुःख का कारण, दुःख का निरोध और दुःख निरोध का मार्ग—बौद्ध चिंतन का आधार हैं। अष्टांगिक मार्ग नैतिक आचरण, मानसिक अनुशासन और प्रज्ञा के विकास के माध्यम से निर्वाण की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

बौद्ध दर्शन में करुणा, मध्यम मार्ग और अनासक्ति पर विशेष बल दिया गया है, जिसने न केवल भारत बल्कि एशिया के अनेक देशों की संस्कृति, राजनीति और सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। इसकी दो प्रमुख शाखाएँ—थेरवाद और महायान—दार्शनिक व्याख्याओं और साधना पद्धतियों में विविधता प्रस्तुत करती हैं (Rahula, 1959; Gombrich, 1988)।

अन्य दार्शनिक परंपराएँ

वैदिक परंपराओं के साथ-साथ भारत में अनेक विधर्मी (नास्तिक) दर्शन भी विकसित हुए, जिन्होंने बौद्धिक विमर्श को समृद्ध किया। आजीवक दर्शन नियतिवाद पर आधारित था और कर्म तथा स्वतंत्र इच्छा की अवधारणाओं पर प्रश्न उठाता था। चार्वाक (लोकायत) दर्शन भौतिकवाद का समर्थन करते हुए प्रत्यक्ष ज्ञान को ही प्रमाण मानता था और परलोक तथा आत्मा जैसी अवधारणाओं को अस्वीकार करता था।

इसके अतिरिक्त, **श्रमण आंदोलन** ने तपस्या, आत्मानुशासन और मोक्ष की खोज को केंद्र में रखते हुए ब्राह्मणवादी कर्मकांड परंपराओं को चुनौती दी। इन विचारधाराओं ने वैचारिक स्वतंत्रता, तर्कशीलता और आलोचनात्मक चिंतन की परंपरा को बल दिया (Chattopadhyaya, 1959; Sen, 2005)।

समन्वित दृष्टि

इन सभी आध्यात्मिक और दार्शनिक धाराओं का समन्वित अध्ययन प्राचीन भारत की दार्शनिक गहराई, बौद्धिक उदारता और वैचारिक बहुलता को उजागर करता है। विविध मतों के सह-अस्तित्व और संवाद की यह परंपरा भारतीय ज्ञान संस्कृति की एक विशिष्ट विशेषता है, जो आज के बहुलतावादी और लोकतांत्रिक समाज के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकती है।

प्रमुख भारतीय ज्ञान परंपराएँ

भारतीय ज्ञान परंपराएँ जीवन, स्वास्थ्य, चेतना और ब्रह्मांड को समझने के लिए एक समग्र और अंतःविषयक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। ये परंपराएँ केवल सैद्धांतिक चिंतन तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन, नैतिक आचरण और आत्मिक उन्नति का मार्गदर्शन भी करती हैं।

आयुर्वेद

आयुर्वेद एक प्राचीन और समग्र चिकित्सा प्रणाली है, जो स्वास्थ्य को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन की अवस्था के रूप में परिभाषित करती है। यह व्यक्ति की प्रकृति और दोष (वात, पित्त, कफ) के अनुसार आहार, दिनचर्या, ऋतुचर्या और औषधीय उपचारों पर बल देती है। आयुर्वेद का प्रमुख उद्देश्य रोगों का उपचार ही नहीं, बल्कि रोगों की रोकथाम और दीर्घकालिक स्वास्थ्य संवर्धन है। आधुनिक शोध आयुर्वेदिक औषधियों और जीवनशैली आधारित हस्तक्षेपों की वैज्ञानिक उपयोगिता को पुनः मान्यता दे रहा है (Wujastyk, 2003; Sharma, 2013)।

योग

योग भारतीय ज्ञान परंपरा का एक केंद्रीय स्तंभ है, जो नैतिक अनुशासन (यम-नियम), प्राणायाम, आसन, ध्यान और समाधि के माध्यम से मन, शरीर और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग मानसिक अनुशासन, आत्मसंयम और चेतना के उच्च स्तर की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। आधुनिक संदर्भ में योग को तनाव प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य और जीवन-गुणवत्ता सुधार के एक प्रभावी साधन के रूप में स्वीकार किया गया है (Feuerstein, 1979; Taimni, 1961)।

वेदांत

वेदांत दर्शन उपनिषदों में निहित आत्मा और ब्रह्म की अद्वैत एकता पर आधारित है। यह दर्शन अज्ञान को बंधन का कारण और आत्मज्ञान को मुक्ति का साधन मानता है। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माध्वाचार्य जैसे आचार्यों द्वारा विकसित अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत वेदांत ने भारतीय दार्शनिक चिंतन को समृद्ध किया। वेदांत व्यक्ति को भक्ति, ज्ञान और कर्म के माध्यम से आत्मोन्नति और मोक्ष की ओर अग्रसर करता है (Radhakrishnan, 1953; Deutsch, 1973)।

सांख्य दर्शन

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की प्राचीनतम प्रणालियों में से एक है, जो वास्तविकता को चेतन तत्त्व (पुरुष) और जड़ तत्त्व (प्रकृति) के रूप में विभाजित करता है। इस दर्शन के अनुसार दुःख का कारण पुरुष और प्रकृति का अज्ञानजनित संयोग है, जबकि विवेक ज्ञान द्वारा इनके भेद की अनुभूति से मुक्ति संभव है। सांख्य दर्शन ने योग दर्शन और भारतीय मनोवैज्ञानिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है (Larson, 1969; Dasgupta, 1922)।

तंत्र परंपरा

तंत्र परंपरा को प्रायः गलत धारणाओं के माध्यम से समझा गया है, जबकि वास्तविकता में यह एक गहन आध्यात्मिक साधना पद्धति है। तंत्र में मंत्र, यंत्र, ध्यान, अनुष्ठान और कुंडलिनी शक्ति के जागरण के माध्यम से चेतना के रूपांतरण पर बल दिया जाता है। यह परंपरा शरीर को आध्यात्मिक साधना का माध्यम मानती है और प्रतीकों व अनुष्ठानों के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करती है। तंत्र ने भारतीय आध्यात्मिकता, कला और धार्मिक प्रथाओं को गहराई से प्रभावित किया है (Avalon, 1919; Flood, 2006)।

समग्र दृष्टिकोण

इन प्रमुख भारतीय ज्ञान परंपराओं का समन्वित अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय चिंतन मानव जीवन को केवल भौतिक उन्नति तक सीमित नहीं मानता, बल्कि स्वास्थ्य, चेतना, नैतिकता और आत्मिक विकास को एक समग्र ढाँचे में देखता है। यही दृष्टि “विकसित भारत” की संकल्पना को सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय आधार प्रदान कर सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपराओं में वैज्ञानिक दृष्टि

भारतीय ज्ञान परंपराएँ केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उनमें अवलोकन (Observation), प्रयोग (Experimentation), तर्क (Logic) और अनुभवजन्य ज्ञान की एक सुदृढ़ वैज्ञानिक परंपरा विद्यमान थी। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने प्रकृति, मानव शरीर और ब्रह्मांड के नियमों को समझने के लिए व्यवस्थित अध्ययन और परीक्षण को अपनाया।

गणितीय दृष्टि

भारतीय गणितज्ञों द्वारा शून्य की अवधारणा और दशमलव संख्या पद्धति का विकास विश्व इतिहास की एक क्रांतिकारी उपलब्धि थी। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे विद्वानों के कार्यों ने बीजगणित, त्रिकोणमिति और संख्या सिद्धांत को नई दिशा दी, जिसने आधुनिक विज्ञान और तकनीक की नींव रखी (Ibrah, 2000; Joseph, 2011)।

खगोल विज्ञान

प्राचीन भारतीय खगोलविदों ने ग्रहों की गति, सूर्य-चंद्र ग्रहण और नक्षत्रों का सूक्ष्म अध्ययन किया। *सूर्य सिद्धांत* और *आर्यभटीय* जैसे ग्रंथों के आधार पर पंचांग और कैलेंडर प्रणालियाँ विकसित हुईं, जिनका उपयोग कृषि, उत्सव और सामाजिक जीवन के नियोजन में किया गया (Pingree, 1981)।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

आयुर्वेद ने स्वास्थ्य को रोग-उपचार तक सीमित न मानकर निवारक और जीवनशैली आधारित चिकित्सा के रूप में देखा। वनौषधियों, आहार विज्ञान और दिनचर्या पर आधारित इसकी पद्धति आधुनिक सार्वजनिक स्वास्थ्य और वेलनेस अवधारणाओं के अनुरूप है। समकालीन वैज्ञानिक शोध आयुर्वेदिक औषधियों की प्रभावशीलता को पुनः प्रमाणित कर रहा है (Wujastyk, 2003; Patwardhan et al., 2005)।

रसायन और कीमिया

भारतीय रसायन शास्त्र (रसायन विद्या) में धातुओं, खनिजों और पारे से संबंधित प्रयोग किए गए। नागार्जुन जैसे आचार्यों के योगदान ने औषधि निर्माण और धातुकर्म में महत्वपूर्ण प्रगति की, जिसने बाद के पदार्थ विज्ञान (Material Science) को प्रभावित किया (Ray, 1909)।

स्थापत्य और इंजीनियरिंग

सिंधु घाटी सभ्यता की उन्नत जल-निकासी प्रणाली, मानकीकृत ईंटें और नगर नियोजन भारतीय इंजीनियरिंग कौशल के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। वहीं, मंदिर स्थापत्य में संरचनात्मक संतुलन, ध्वनि विज्ञान और ज्यामितीय सटीकता भारतीय तकनीकी ज्ञान की पराकाष्ठा को दर्शाती है (Kenoyer, 1998; Kramrisch, 1946)।

कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

भारतीय ज्ञान परंपराओं के संरक्षण, संवर्धन और पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारण में कला ने एक केंद्रीय और सजीव माध्यम की भूमिका निभाई है। भारतीय संदर्भ में कला केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि दार्शनिक चिंतन,

आध्यात्मिक अनुभूति और सामाजिक मूल्यों की वाहक रही है। दृश्य, श्रव्य और प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपराएँ जनसामान्य के जीवन में अंतर्निहित होती चली गईं।

मंदिर वास्तुकला

भारतीय मंदिर वास्तुकला *वास्तु शास्त्र*, *शिल्प शास्त्र* और पवित्र ज्यामिति के सिद्धांतों पर आधारित है। मंदिर को सूक्ष्म और स्थूल ब्रह्मांड का प्रतीक माना गया है, जहाँ गर्भगृह आत्मा का और शिखर ब्रह्मांडीय चेतना का प्रतीक होता है। मंदिर की संरचना इस प्रकार की जाती है कि वह भक्त को बाह्य संसार से आंतरिक आध्यात्मिक अनुभूति की ओर ले जाए। स्थापत्य में गणितीय अनुपात, ध्वनि विज्ञान और खगोलीय संरेखण भारतीय वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टि की गहराई को दर्शाते हैं (Kramrisch, 1946; Acharya, 2008)।

शास्त्रीय नृत्य

भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी और मणिपुरी जैसी शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ *नाट्यशास्त्र* और *अभिनय दर्पण* पर आधारित हैं। इनमें भाव, रस, मुद्रा (हस्त-मुद्राएँ), अंग-संचालन और लय के माध्यम से रामायण, महाभारत तथा पुराणों की कथाएँ सजीव रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। नृत्य को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि साधना और आत्मिक अनुशासन का माध्यम माना गया है (Vatsyayan, 1977; Coomaraswamy, 1956)।

चित्रकला और भित्तिचित्र

अजंता और एलोरा की गुफाओं के भित्तिचित्र, तंजावुर पेंटिंग, राजपूत और मुगल लघुचित्र भारतीय धार्मिक, नैतिक और दार्शनिक विचारों के दृश्य अभिलेख हैं। ये कलाकृतियाँ न केवल सौंदर्यबोध को दर्शाती हैं, बल्कि बौद्धिक और आध्यात्मिक चिंतन को भी दृश्य रूप प्रदान करती हैं। जातक कथाओं, रामकथा और कृष्ण लीला के चित्रण के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपराएँ जनमानस में गहराई से स्थापित हुईं (Sivaramamurti, 1977)।

संगीत और मंत्र

भारतीय शास्त्रीय संगीत *नाद ब्रह्म* की अवधारणा पर आधारित है, जिसके अनुसार ध्वनि को ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना गया है। राग और ताल के संयोजन से उत्पन्न संगीत मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और आध्यात्मिक चेतना के उत्थान में सहायक होता है। मंत्रोच्चार और भक्ति संगीत जैसे भजन एवं कीर्तन ध्यान और साधना के प्रभावी साधन हैं। भारतीय संगीत को कई परंपराओं में मोक्ष प्राप्ति के मार्ग के रूप में भी देखा गया है (Rowell, 1992; Sharma, 2007)।

लोक कला और शिल्प

भारतीय लोक कला और शिल्प—जैसे रंगोली, मधुबनी, वारली, पिथोरा, कलमकारी, हस्तकरघा और मिट्टी व धातु शिल्प—दैनिक जीवन में सांस्कृतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विश्वासों का सहज समावेश दर्शाते हैं। ये कलाएँ केवल सजावटी नहीं, बल्कि सामुदायिक स्मृति, पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक पहचान की वाहक हैं। लोक कलाओं के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपराएँ ग्रामीण और जनजातीय समाज में आज भी जीवंत बनी हुई हैं (Jain, 2010; Dehejia, 1997)।

विकसित भारत में योगदान की संभावनाएँ

“विकसित भारत” की परिकल्पना केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मानव विकास, सामाजिक न्याय, नैतिकता, पर्यावरणीय स्थिरता और मानसिक-आध्यात्मिक कल्याण भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस

व्यापक दृष्टि से देखें तो भारतीय ज्ञान परंपराएँ विकसित भारत के निर्माण में एक सशक्त वैचारिक और व्यवहारिक आधार प्रदान कर सकती हैं।

भारतीय ज्ञान परंपराएँ समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा को केंद्र में रखती हैं, जहाँ शरीर, मन और आत्मा को एक अविभाज्य इकाई माना गया है। योग और ध्यान तनाव प्रबंधन, भावनात्मक संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में प्रभावी सिद्ध हुए हैं, जिसकी पुष्टि समकालीन मनोविज्ञान और चिकित्सा अनुसंधान भी करता है (WHO, 2016; Feuerstein, 1979)। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तीव्र जीवन-परिवेश में योग-ध्यान नागरिकों की उत्पादकता और जीवन-गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं।

इसी प्रकार आयुर्वेद निवारक स्वास्थ्य देखभाल, जीवनशैली सुधार और प्राकृतिक चिकित्सा पर बल देता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली पर बढ़ते बोझ को कम करने और “स्वस्थ भारत” के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक हो सकता है (Patwardhan et al., 2005)।

भारतीय दर्शन में धर्म और कर्म के सिद्धांत व्यक्ति को अपने कर्तव्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक आचरण के प्रति सजग बनाते हैं। ये सिद्धांत नागरिकों में ईमानदारी, सहिष्णुता, करुणा और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देकर नैतिक नागरिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं (Radhakrishnan, 1953)।

इसके अतिरिक्त, भारतीय ज्ञान परंपराएँ प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व पर बल देती हैं। पंचमहाभूत, ऋतुचक्र और संतुलित उपभोग की अवधारणाएँ आज की पर्यावरणीय चुनौतियों—जैसे जलवायु परिवर्तन और संसाधन क्षरण—के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार, IKS विकसित भारत को सतत विकास (Sustainable Development) की दिशा में अग्रसर करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

एकीकरण की रणनीतियाँ

भारतीय ज्ञान परंपराओं के प्रभावी उपयोग के लिए उन्हें आधुनिक प्रणालियों के साथ समन्वित और व्यावहारिक रूप में लागू करना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं:

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप IKS का समावेश

NEP 2020 भारतीय ज्ञान परंपराओं को शिक्षा के सभी स्तरों पर समाहित करने पर बल देती है। पाठ्यक्रमों में योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान और कला परंपराओं को वैज्ञानिक और आलोचनात्मक दृष्टि से शामिल किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक आत्मबोध और नवोन्मेषी सोच का विकास हो (Ministry of Education, 2020)।

2. एकीकृत स्वास्थ्य मॉडल

आधुनिक चिकित्सा के साथ आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा का समन्वय एक समग्र और किफायती स्वास्थ्य मॉडल प्रस्तुत कर सकता है। यह मॉडल रोग-उपचार के साथ-साथ निवारण और पुनर्वास पर भी ध्यान केंद्रित करेगा, जिससे स्वास्थ्य प्रणाली अधिक जनोन्मुखी बन सकेगी (WHO, 2013)।

3. अनुसंधान, नवाचार और स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहन

IKS आधारित अनुसंधान को प्रोत्साहित कर औषधि विकास, वेलनेस उद्योग, पर्यावरणीय समाधान और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में नवाचार और स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे रोजगार सृजन के साथ-साथ ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था को भी बल मिलेगा।

4. डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक प्रसार

डिजिटल तकनीकों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपराओं को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया जा सकता है। ई-लर्निंग, डिजिटल संग्रहालय और ओपन नॉलेज प्लेटफॉर्म भारत को ज्ञान-नेतृत्व (Knowledge Leadership) की दिशा में स्थापित कर सकते हैं।

5. सामुदायिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता

स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर योग, आयुर्वेद, जैविक कृषि और पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणालियों को बढ़ावा देने से समावेशी विकास और पर्यावरणीय संतुलन सुनिश्चित किया जा सकता है।

References

1. Acharya, P. K. (2008). *Indian architecture according to Manasara*. Oxford University Press.
2. Avalon, A. (1919). *The serpent power: The secrets of tantric and shaktic yoga*. Ganesh & Co.
3. Coomaraswamy, A. K. (1956). *The dance of Shiva: Fourteen Indian essays*. Dover Publications.
4. Dasgupta, S. N. (1922). *A history of Indian philosophy* (Vol. 1). Cambridge University Press.
5. Dehejia, V. (1997). *Indian art*. Phaidon Press.
6. Deutsch, E. (1973). *Advaita Vedanta: A philosophical reconstruction*. University of Hawaii Press.
7. Feuerstein, G. (1979). *The Yoga-Sūtra of Patañjali: A new translation and commentary*. Inner Traditions.
8. Flood, G. (2006). *The tantric body: The secret tradition of Hindu religion*. I.B. Tauris.
9. Ifrah, G. (2000). *The universal history of numbers: From prehistory to the invention of the computer*. Wiley.
10. Jain, J. (2010). *Folk art and culture of India*. National Book Trust.
11. Joseph, G. G. (2011). *The crest of the peacock: Non-European roots of mathematics* (3rd ed.). Princeton University Press.
12. Kenoyer, J. M. (1998). *Ancient cities of the Indus Valley civilization*. Oxford University Press.
13. Kramrisch, S. (1946). *The Hindu temple* (Vols. 1–2). Motilal Banarsidass.
14. Larson, G. J. (1969). *Classical Sāṃkhya: An interpretation of its history and meaning*. Motilal Banarsidass.
15. Ministry of Education, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
16. Patwardhan, B., Warude, D., Pushpangadan, P., & Bhatt, N. (2005). Ayurveda and traditional medicine: A modern perspective. *Current Science*, 88(6), 861–870.
17. Pingree, D. (1981). *Jyotiḥśāstra: Astral and mathematical literature*. Otto Harrassowitz.
18. Radhakrishnan, S. (1953). *Indian philosophy* (Vols. 1–2). George Allen & Unwin.
19. Ray, P. C. (1909). *A history of Hindu chemistry* (Vols. 1–2). Williams and Norgate.
20. Rowell, L. (1992). *Music and musical thought in early India*. University of Chicago Press.
21. Sharma, P. V. (2013). *Charaka Samhita (text with English translation)*. Chaukhambha Orientalia.
22. Sharma, P. (2007). *Indian music*. Bharatiya Vidya Bhavan.
23. Sivaramamurti, C. (1977). *Indian painting*. National Museum.
24. Taimni, I. K. (1961). *The science of yoga*. Theosophical Publishing House.
25. Vatsyayan, K. (1977). *Classical Indian dance in literature and the arts*. Sangeet Natak Akademi.
26. World Health Organization. (2013). *WHO traditional medicine strategy 2014–2023*. WHO Press.
27. World Health Organization. (2016). *Mental health and well-being*. WHO Press.
28. Wujastyk, D. (2003). *The roots of Ayurveda: Selections from Sanskrit medical writings*. Penguin Classics.